



हमें सोचना होगा दोबारा, क्योंकि गहराई से सोचने की यह बात है,
हमें बनना होगा सजग ज्यादा, क्योंकि दुर्घटना डायन मारे जात है!

जान गँवायें, माल गँवायें, मान गँवायें, सम्मान गँवायें,
गँवायें हम नौकरी हमारी, लापरवाही की यही सौगात है,
क्योंकि दुर्घटना डायन मारे जात है!

परिवहन के हम सभी हैं मुखिया, इस सम्मान को बनाये हैं रखना,
कहीं कलंक नहीं लग जाये, रेलवे की छवि हमारे ही हाथ है!

क्योंकि दुर्घटना डायन मारे जात है!
यात्री करते हैं हम पर भरोसा, उस भरोसे को कायम है रखना,
कहीं होवे न भूल हमारी, वरना मौत से सीधी मुलाकात है,
क्योंकि दुर्घटना डायन मारे जात है!

दुर्घटना..

गैसाल हो या सेंथिया हादसा, हो चाहे समलाया दुर्घटना,
नहीं चाहते उन्हें हम दोबारा, यही हमारे दिल के जज़्बात हैं,
क्योंकि दुर्घटना डायन मारे जात है!

पूरा विश्राम कर काम पर आना, नशे की हालत में कभी नहीं रहना,
यही है हमारा नारा, सतर्कता ज़रूरी दिन-रात है,
क्योंकि दुर्घटना डायन मारे जात है!

परिचालन के नियमों को जानें, उन नियमों को पालन करें,
होगा नहीं कहीं भी हादसा, चाहे तूफान या फिर बरसात है,
क्योंकि दुर्घटना डायन मारे जात है!

हमें सोचना होगा दोबारा, क्योंकि गहराई से सोचने की यह बात है,
हमें बनना होगा सजग ज्यादा, क्योंकि दुर्घटना डायन मारे जात है!

दिनेश वर्मा, सहायक परिवहन प्रबंधक (नियम), पश्चिम रेलवे, चर्चगेट

अंधेरे में भटकी लहरों को,
किनारे लगाता है शिक्षक!
माटी के लोदे को आकार देता,
साकार कर्ता विधाता है शिक्षक!
गुरु में गुरुता, देवों में देवता,

शिक्षक भाग्य विधाता

सच्चा इन्सान बनाता है शिक्षक! जीना है क्या? मरना है क्या?
अपने-अपने कर्मों से बनते जहाँ में, अमरता का पाठ सिखाता है शिक्षक!
दानव को मानव बनाता है शिक्षक! शिष्यों का जीवन सार्थक है करता,

भावी राष्ट्र निर्माता है शिक्षक!
क्या कोई उन्नत होगा इस जग में?
सुशिक्षित शिक्षक बनाता है जग में।
गगन से भी उँचा, धरा से भी भारी,
ज्ञान सागर का अमृत पिलाता है शिक्षक!

मोतीलाल जगदीश कलवार, वरिष्ठ लिपिक, बिजली विभाग, मंडल रेल कार्यालय, मुंबई सेंट्रल

जी, नहीं! मेरा आशय विश्व के तीन बड़े राष्ट्रों के बाद वाली चौथी सीट से बिल्कुल नहीं है, वरन् मुंबई की सबर्बन ट्रेन के तीसरे दर्जे में लगी उन सीटों से है, जो सिर्फ तीन मुसाफिरों के लिए बनाई गई हैं परन्तु जिस पर चौथे आदमी की नीयत हमेशा लगी रहती है और जिसे प्राप्त करके वह अपने आपको बड़ा भाग्यशाली समझता है! मेरा ख्याल है..नहीं..नहीं मुझे विश्वास है-क्योंकि उनमें से मैं भी एक हूँ-कि वह चौथी सीट पर अधिपत्य जमाते ही सबसे पहले यही सोचता है कि आज सुबह किसका मुँह देखा था और वही शुभ छवि रोज देखने का दृढ़ संकल्प भी उसी क्षण उसी आसन पर बैठे-बैठे कर लेता है। पता नहीं आपको इस चौथी सीट पर बैठने का सौभाग्य प्राप्त हुआ या नहीं-यदि नहीं-तो देर न कीजिए। इस शुभ कार्य को कर ही डालिये। फिर देखिये, क्या आनन्द आता है। आपको पहले तो बड़ा संकोच होगा जब आप तीन भले आदमियों को पैर फैलाये अखबार पलटते या कोई उपन्यास पढ़ते हुए या खरिटे लेते हुए देखेंगे। आपकी भलमनसाहत शायद यह गवारा न करे कि इनके आराम में खलल डाला जाए। परन्तु ऐसे काम नहीं चलेगा। संकोच छोड़िए, यह मुंबई है। हाँ तो जो साहब खिड़की की तरफ से तीसरे और आपके नजदीक हैं, उनके कन्धे पर धीरे से एक दो टीप मारिये... तैयार रहिये, वह भगवान शिव का तीसरा नेत्र खोलने वाली मुद्रा से आपकी ओर देखेंगे। आप बस खीसे निपोरते हुए 'प्लीज' कहिए और हाथ से हटने का इशारा कीजिए।

उनकी नजर आपको आपाद मस्तक सेंकती हुई बाजूवाले साहब पर पड़ेगी जो मुँह बाये खरिटे ले रहे हैं। थोड़ा 'प्रेशर' बढ़ाइए। लीजिए, 'बैण्डा आला' कहते हुए वे एकदम से उचक पड़ेंगे, फिर गलती महसूस करते हुए और पैर फैलाकर बैठ जायेंगे। इसी समय आप फिर एक टीप लगाइए। वे सज्जन अपने पैरों को ऊँचा-नीचा करते हुए आपको यह समझने के लिए मजबूर कर देंगे कि उन्हें आपके प्रति पूरी सहानुभूति है-पर जो तीसरे साहब कोने में बैठे 'मेन ओनली' का मजा ले रहे हैं उनकी भीमाकार काया के संकुचित हुए बिना बेचारे मजबूर हैं। यह खलबली तीसरे साहब का ध्यान आकर्षित करती है-बड़ी सज्जनता से वे अपने में समाने की चेष्टा करते हैं। आपका भगीरथ प्रयत्न सफल होता है और दो तीन इंच..नहीं.. नहीं सेंटीमीटर-(माप की दशमिक प्रणाली) जगह आपको मिल जाती है।

आप खुशी-खुशी बैठते हैं। बैठते ही उठने की तबियत होने लगती है, पर अब उठना भी बेकार है, लोग क्या कहेंगे? चुपचाप किसी तरह बैठे रहने में ही भलाई समझ कर आप उस चौथी सीट का मजा लेते रहते हैं। क्रम चलता रहता है और आप धीरे-धीरे खिड़की की ओर बढ़ते जाते हैं। ज्यों-ज्यों आप खिड़की की ओर बढ़ते हैं त्यों-त्यों यहाँ की भाषा में आपका 'प्रमोशन' या तरक्की होती जाती है, तथा कोई न कोई सज्जन चौथी सीट को प्राप्त करने का प्रयत्न करते रहते हैं। यह चौथी सीट क्या गुल खिलाती है यह तो मुंबई की सबर्बन ट्रेन के तीसरे दर्जे में सफर करने वाले सभी

जानते हैं। पर कभी कभी कोई घटना दिमाग पर अपनी अमिट छाप छोड़ जाती है। उस दिन भी ऐसा ही कुछ हुआ। बारिश हो चुकी थी। गाड़ी रवाना हुई ही थी कि धोती कुर्ता पहने एक हाथ में गीला छाता तथा दूसरे में एक गुजराती समाचार पत्र लिये एक भारी भरकम शरीर ने किसी प्रकार हाँफते हुए डिब्बे में पदार्पण किया। उनके व्यवहार से साफ ज़ाहिर था कि वे-'यह मुंबई है'-के गुरु को खूब अच्छी तरह जानते थे तथा एक अभ्यस्त की तरह उस पर अमल भी करते थे। किसी की भी परवाह न करते हुए वे दरवाजे से बढ़ते हुए सीटों के बीच वाले गलियारे में पहुँच गये। वहाँ पहुँच कर श्रीमानजी ने चारों ओर निगाह दौड़ाई। आखिर उनकी लक्ष्यभेदी दृष्टि ने चौथी सीट

ढूँढ़ ही ली। अब क्या था किसी को धक्केलते किसी का पैर कुचलते किसी को संभालते हुए वे अपने गन्तव्य स्थान पर पहुँच ही गये। बेंचों पर आमने सामने बैठे हुए लोग अपनी 'रमी' में मस्त थे। तीसरी सीट पर दुबले-पतले लम्बे से एक सज्जन एक दम सफेद व कड़क कपड़े पहने अपने से अधिक कपड़ों का ख्याल करते हुए बैठे थे।

उनका 'हेयर-स्टाइल' भी कमाल का था। गंजी खोपड़ी पर कान के आसपास व पीछे गर्दन के ऊपर के बालों को उन्होंने इस तरतीब से फैलाने की कोशिश की थी कि उनकी चमकदार खोपड़ी नजर न आयें। मुझे तो डर है कहीं यह एक नया फैशन ही न बन जाये। यूल ब्रेनर के बाद इन साहब का 'हेयर-स्टाइल' भी चल पड़े और लोग अपनी टाल (खोपड़ी) को 'आर्टीफीशियल गंजी' करार कर इस नये फैशन के केशविन्यास को अपना लें तो आश्चर्य नहीं!... हाँ, तो अपने श्रीमानजी ने एक हल्की सी टीप इन सज्जन के कन्धे पर लगाई। एकदम गरम होते हुए वे गरज पड़े-'क्या करता है?' 'गरम कायको होता है, थोड़ा सा खसक जाओ हम भी बैठेंगे।' 'हम भी बैठेंगे!' देखता नहीं तीन आदमी बैठेला है।' 'उधर भी तो चार आदमी बैठे हैं।' 'बैठा होगा! यह सीट तीन आदमी का वास्ते है। नहीं हटेगा।' 'तो दादागिरी कायको दिखाता है?' 'पन तुम अकड़ता काय को है?' 'तो तुम क्या कर लेगा?' 'क्या कर लेगा।' 'कड़क कपड़े जैसा अपने को भी कड़क समझता है क्या?

अभी बीच बचाव की कोशिश हो ही रही थी कि पीछे वाली बेंच पर बैठे कुछ उच्छुंखल युवकों ने किलकारी मारी- अभी एक संभ्रंत बूढ़े सज्जन उठकर खड़े हो गये-आइए आप यहाँ बैठ जाइए। उनकी बात का फौरन असर पड़ा। चिल्लाने वाले लड़के चुप हो गये। सीट माँगने वाले के चेहरे का भाव स्पष्ट था-'मुझे क्या अधिकार था कि चौथी सीट के लिए झगड़ा करूँ?' तीसरी सीटवाले सज्जन भी शायद कायल हो गये क्यों कि उन्होंने तत्काल ही सीट माँगने वाले को अनुरोध पूर्वक अपने पास बिठा लिया। चौथी सीट हमारा अधिकार नहीं है मगर सहयात्रियों की सुविधा में सुख अनुभव करना हमारा कर्तव्य जरूर है-जैसे ट्रेन में, वैसे ही जीवन में।

हरिश दीक्षित

सेवानिवृत्त वरिष्ठ सांख्यिकीय निरीक्षक, पश्चिम रेलवे, चर्चगेट

